International Journal of Applied Research 2017; 3(7): 534-538

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(7): 534-538
www.allresearchjournal.com
Received: 17-05-2017
Accepted: 18-06-2017

ममता घोरमार
शोधार्थी शास. ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी एवं उत्कृष्ट)
महाविद्यालय रीवा (म.प्र.), भारत

सी.एम. मिश्र
प्राचार्य शास. नवीन महाविद्यालय, मनगवां जिला–रीवा (म.प्र.), भारत

Correspondence
ममता घोरमार
शोधार्थी शास. ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी एवं उत्कृष्ट)
महाविद्यालय रीवा (म.प्र.), भारत

स्वतंत्रता के पूर्व जनगणना के आकड़ों का सर्वेक्षण

ममता घोरमारे और सी.एम. मिश्र

प्रस्तावना

जनसंख्या और संसाधन पर विचार का इतिहास प्लेटो से प्रारम्भ हुआ। किन्तु इस पर व्यवस्थित विचार प्रस्तुत करने का प्रथम श्रेय रावर्ट माल्थस को जाता है। उसका विचार माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत कहा गया। तब से बहुत से विद्वानो ने जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने वाले नियमों को खोजने का प्रयास किया। मुख्य रूप से जनसंख्या के सिद्धांत को दो भागों में विभाजित किया गया है जो इस प्रकार है प्राकृतिक आधार पर जनसंख्यास का सिद्धांत देने वालों में मुख्य रूप से माल्थस थे इस आधार पर जनसंख्या सिद्धांत के अन्य जनक सैंडलर,थामस डब्लू एवं हबर्टे स्पेंसर भी थे।सामाजिक आधार पर जनसंख्या के सिद्धांत देने वालों में हेनरी जार्ज, अर्सेन, डेविडरिकार्डो और कार्ल माकर्स थे।

नगरीय स्थानों की जनगणना द्वारा दी गई परिभाषा

स्वतंत्रता के पूर्व अर्थात वर्ष 1951 तक भारत की जनगणना द्वारा दी गई परिभाषा इस प्रकार थी।
1 वे सभी स्थान जिनमें नगरपालिका, निगम, छावनी तथा अधि सूचित क्षेत्र होते है।
2 वे सभी स्थान नगरीय क्षेत्र है जो निम्नलिखित शर्तो को पूरा करते हो–

1. 5000 की न्यूनतम जनसंख्या
2. पुरूष कामकाजी जनसंख्या का कम से कम 75: गैर–कृषीय क्रियाकलापों से जुटा हुआ हो
3. कम से कम 400 व्यक्ति प्रति वर्ग कि. मी. का जनसंख्या घनत्य हो

तालिका 1.1: स्वतन्त्रता के पूर्व– नगरीकरण जनसंख्या का प्रतिशत (1881–1941)

वर्ष	नगरीकरण (प्रतिशत)
1881	9.3
1891	9.4
1901	11.0
1911	10.4
1921	11.3
1931	12.2
1941	14.1

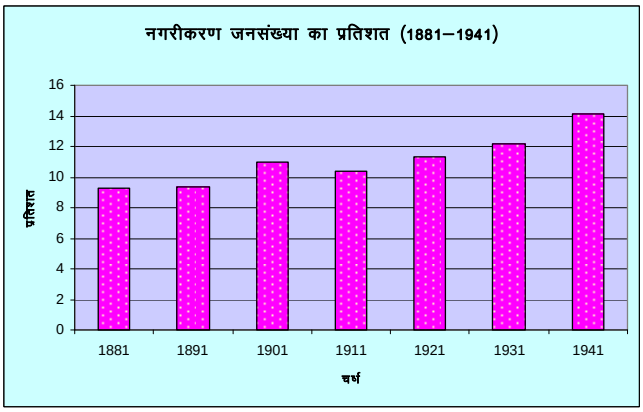

उक्त तालिका 1.1 में देखा जा सकता है कि 1881 में भारत की नगरीय जनसंख्या कुल आबादी का मात्र 9.3 प्रतिशत थी जो 1941 में बढ़कर 14.1 प्रतिशत हो गयी। नगरीय जनसंख्या की वृद्धि स्थायी नही है (1981–1931) इन पचास वर्ष के दौरान नगरीय जनसंख्या में एक प्रतिशत प्रति वर्ष से भी कम औसत वार्षिक दर की गति से वृद्धि हुई है। जिसे चित्र में देखा जा सकता है।

स्वतंत्रता पूर्व जनसंख्या के आकड़े 1901–1941 तक प्राप्त आधार पर निम्न ग्राफ प्रस्तुत है।

तालिका 1.2. स्वतन्त्रता पूर्व भारत की जनसंख्या वृद्धि (1901–1941)

तालिका 1.2 भारत में जनसंख्या वृद्धि 1901–1941	
जनगणना वर्ष	**जनसंख्या**
1901	23,83,96,327
1911	25,20,93,390
1921	25,13,21,213
1931	27,89,77,238
1941	31,86,60,580

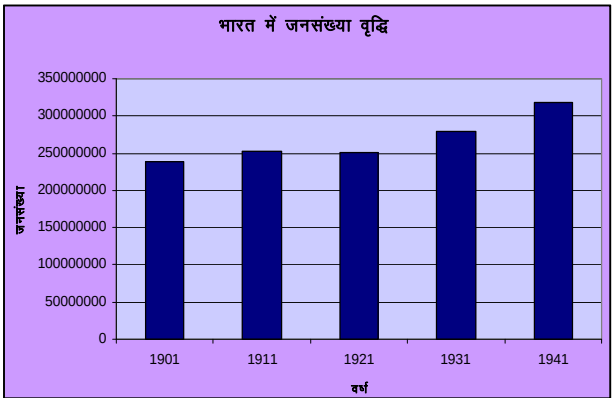

उक्त तालिका में 1901 से प्रत्येक दस वर्षो में दर्ज की गई भारतीय जनसंख्या के आकड़े प्रस्तुत है जिसे देखने से पता चलता है कि 1901 में भारत की कुल जनसंख्या 233 मिलियन थी जो 1941 में 318 मिलियन हो गई 1911 और 1921 में बहुत ज्यादा अन्तर नही रहा, फलस्वरूप जनसंख्या वृद्धि की यह अवधि स्थिर थी। इसका प्रमुख कारण महामारियां जैसे हैजा मलेरिया, प्लेग, इत्यादि के कारण मृत्यु ज्यादा होती थी इसके अलावा 1911,1912,1915,1918, तथा 1920 में सूखा पड़ने के कारण खाद्य सामाग्रियों की–कमी हो गई। इसके अलावा पहले विश्वयुद्ध (1914–1918) में हजारों भारतीय सैनिक की जाने गई। आकड़ों को देखने से यहपता चलता है कि 1911 तथा 1921 के बीच भारत की जनसंख्या में एक घटती प्रकृति देखने को मिलती है इसीलिए जनगणना वर्ष 1921 जनसांख्यिकी विभाजन का वर्ष–कहा जाता है। जिसे चित्र में देखा जा सकता है।

स्वतंत्रता पूर्व भारत में जनसंख्या का घनत्व (1901–2011)

जनसंख्या घनत्व भूमि तथा आबादी के अनुपात को प्रदर्शीत करता है। जनसंख्या घनत्व प्रति इकाई क्षेत्रफल में निवास करने वाली– जनसंख्या को कमी कहा जाता है।

$$\text{जनसंख्या घनत्व} = \frac{\text{कुल जनसंख्या}}{\text{कुल क्षेत्रफल}}$$

स्वतंत्रता के पूर्व (1901–1941) भारत के विभिन्न राज्य/केन्द्रशासित प्रदेशों का जनसंख्या घनत्व तालिका 1.3 में अंकित किया गया है और ग्राफ में प्रदर्शित भी किया गया है।

उदाहरणतया यदि हम मानलें की भारत के किसी राज्य जैसे मध्यप्रदेश का कुल क्षेत्रफल 31.7 लाख वर्ग कि. मी. है और सन् 1941 की जनगणना के अनुसार इसकी जनसंख्या 10.287 लाख है तो जनसंख्या का घनत्व निम्न प्रकार ज्ञात किया जा सकता है।

$$\text{जनसंख्या घनत्व} = \frac{10287}{31.70}$$

अर्थात 1941 की जनगणना के अनुसार भारत में जनसंख्या का घनत्व 325 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है भारत में जनसंख्या के घनत्व में होने वाली वृद्धि को ग्राफ में देखा जा सकता है इसके अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि भारत में जनसंख्या का घनत्व 1901 में 77 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी., 1911 में 82 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी., 1921 में 81 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी., 1931 में 90 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. 1941 में 103 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. थी निष्कर्ष यह निकलता है कि भारत में जनसंख्या घनत्व में 1911 और 1921 के बीच गिरावट दर्ज की गई जो 1911 में 82 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि.मी. से घटकर 1921 में 81 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. रह गई जिसका कारण कई संक्रामक बिमारियां जैसे–हैजा मलेरिया आदि और युद्ध रहा है।

स्वतंत्रता पूर्व भारत में आयु वर्ग के अनुसार जनसंख्या

जैसा पूर्व में बताया गया है कि जनसंख्या विभाग ने देश की जनसंख्या को मुख्य रूप से तीन भागों में बांटा है

1. किशोर (15 वर्ष से कम अर्थात 0–14 वर्ष)
2. युवा (60 वर्ष से कम अर्थात 15–59 वर्ष)
3. वृद्ध (60 वर्ष तथा इससे अधिक आयु)

ट्रिवार्थी के अनुसार युवा आयु जैविक वृद्धि से अधिक प्रजनशील और आर्थिक रूप से अधिक क्रियाशील एवं अधिक संचरणशील होता है इसीलिए 15–से 59 वर्ष आयु के लोगों को श्रम जीवी अथव कार्यरत आयु वर्ग कहा जाता है।

जनसंख्या वृद्धि के आकड़ों के विश्लेषण से यह विदित होता है कि भारत की जनसंख्या (1901–1941) में निरन्तर कमी हो रही है, क्योंकि इन चालीस वर्षो में युद्ध, महामारी, अकाल, आदि इसका मुख्य कारण रहे है।

तालिका 1.3: भारत में आयु वर्ग के अनुसार जनसंख्या (कुल का प्रतिशत) कुल का प्रतिशत

वर्ष	0–14 वर्ष (किशोर)	15–59 वर्ष (युवा)	60 वर्ष से अधिक (वृद्ध)
1901	38.1	56.8	5.1
1911	37.8	56.9	5.2
1921	38.6	56.0	5.4
1931	38.5	56.4	5.1
1941	39.1	55.2	5.7

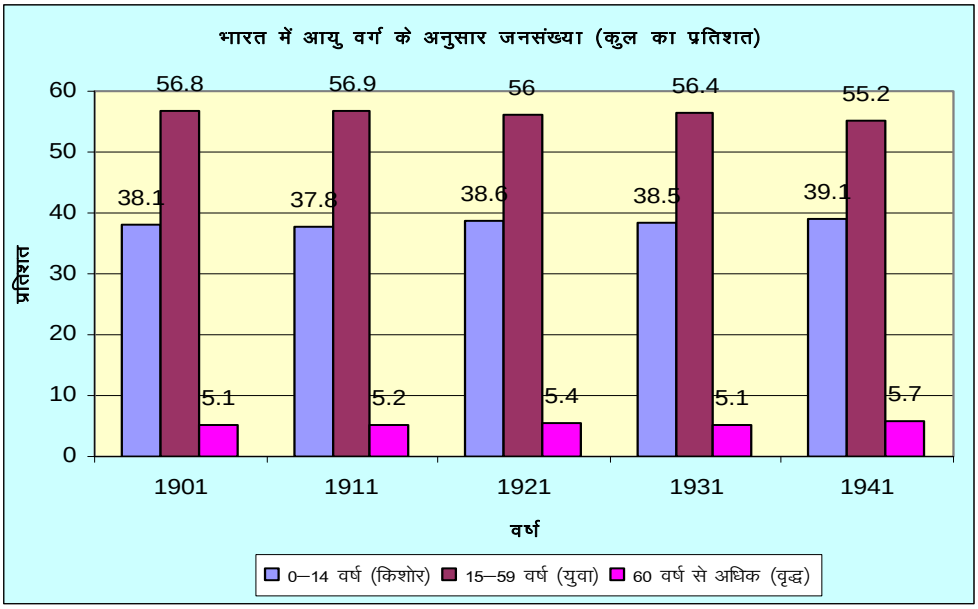

कुछ विद्वान इस आयु काल को जीवन प्रत्याशा का ही पर्यायवाची मानते है जीवन प्रत्याशा जन्म के समय आयु का सूचक है जबकी आयु का लम्बी आयु का बोध कराता है तालिका 1.3 एवं आयु वर्ग की जनसंख्या को दर्शाता है। तालिका 1.3 एवं ग्राफ देखने से स्पष्ट होता है कि किशोरों का प्रतिशत 1901 में 38.1 था 1901 में घटकर 37.8 हो गया 1921 में बड़कर 38.6, 1731 में 38,5 और 1941 में 19.1 हुआ। जिसे चित्र में देखा जा सकता है।

स्वतंत्रता पूर्व भारत की साक्षरता

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व भारत में साक्षरता की स्थिति दुःखद थी जैसे कि भारत सरकार द्वारा कराई गई जनगणनाओं के आकड़ों से स्पष्ट है सन् 1901 की जनगणना के अनुसार देश की साक्षरता 5.35, 1911 में 5.92 1921 में 7.16, 1931 में 9.50 और 1941 में 16.10 प्रतिशत थी उक्त आकड़ों को देखकर एक मुख्य बिन्दु सामने आता है कि स्वतंत्रता के पूर्व साक्षरता दर अत्यधिक सोचनिय थी जिसका मुख्य कारण यह था कि अंग्रेजो द्वारा हमारे देश के नागरिकों को शिक्षा से वंचित रखा जाता था।

भारत में साक्षरता की स्थिति

यदि किसी देश की प्रगति अथवा संस्कृति की संपन्नता को नापना हो तो सबसे पहले उस देश की साक्षरता प्रतिशत को देखा जाता है साक्षरता और शिक्षा की सीढ़ी चढ़कर ही कोई देश विकास की ओर पहुच सकता है भारत में साक्षरता की स्थित को निम्न तालिका 2.4 से समझा जा सकता है।

तालिका 1.4: स्वतंत्रता के पूर्व साक्षरता का प्रतिशत

क्र.	जनगणना वर्ष	साक्षरता का प्रतिशत		कुल
		पुरूष	महिला	
1	1901	9.83	0.60	5.35
2	1911	10.56	1.05	5.92
3	1921	12.21	1.81	7.16
4	1931	1559	2.93	9.50
5	1941	24.60	7.30	16.10

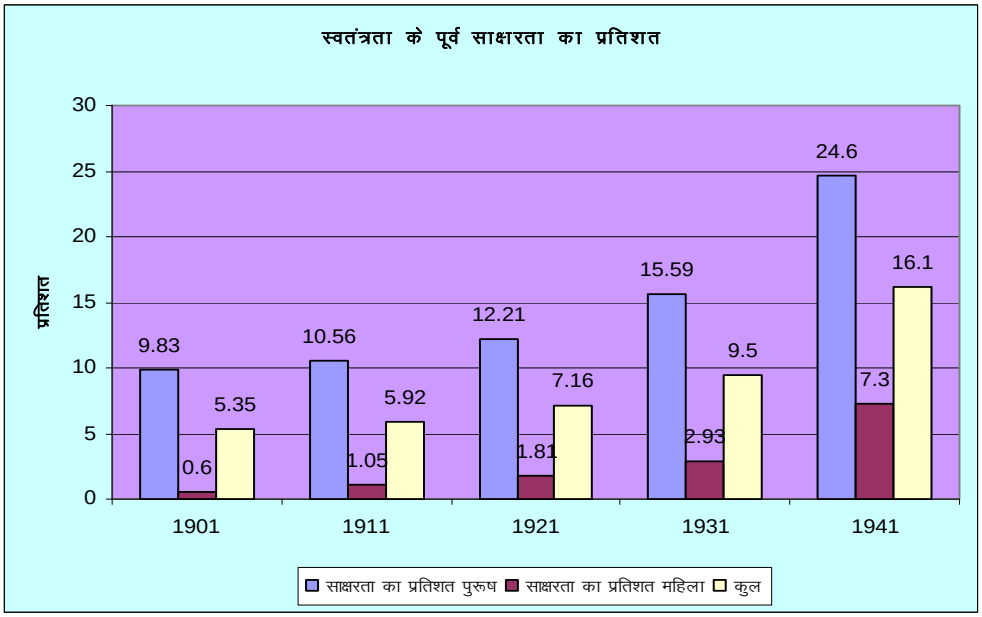

किसी भी देश का विकास या उन्नती व उस देश की साक्षरता को बताता है यह सामाजिक–सास्कृतिक विकास तथा राजनीतिक जागरूकता का एक महत्वपूर्ण सूचक है यह सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन का एक बड़ा कारण है। क्योंकि इसके द्वारा विशेष निपुणता तथा व्यवसायिक योग्यता अर्जित की जा सकती है साक्षरता, सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को त्वरित करता है 1901 में भारत की साक्षरता दर 5.35 प्रतिशत थी (पुरूष 9:83: और महिलाएं 0.60:) साक्षरता दर निरन्तर बढ़ता रहा है 1941 में यह 16.10 प्रतिशत थी (पुरूष 24.60: और महिलाएं 7.30%)

उक्त आकड़ों एवं ग्राफ को देखकर यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत की साक्षरता दर सबसे कम 1901 में रहीं तथा पुरूष–महिला में साक्षरता का अन्तर भी कम था (9.23:) जिसे चित्र में देखा जा सकता है।

ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या (Rural- Urban Population)

ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या किसी देश की औद्योगिक विकास का सूचक होता है जैसे–जैसे औद्योगिक विकास होता है वैसे–वैसे उस देश की नगरीय जनसंख्या में वृद्धि होती है भारत में स्वतंत्रता पूर्व विभिन्न दशकों में नगरीय जनसंख्या का अनुपात तालिका 1.5 में दिया गया है।

तालिका 1.5: स्वतन्त्रता पूर्व भारतीय ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या (1901–1941)

जनगणना वर्ष	ग्रमीण जनसंख्या (करोड़ो में)	नगरीय जनसंख्या (करोड़ो मे)	ग्रामीण जनसंख्या (प्रतिशत में)	नगरीय जनसंख्या (प्रतिशत में)
1901	21.3	2.6	89.2	10.8
1911	22.6	2.6	89.7	10.3
1921	22.3	2.8	88.8	11.2
1931	24.6	3.3	88.0	12.0
1941	27.5	4.4	86.1	13.9

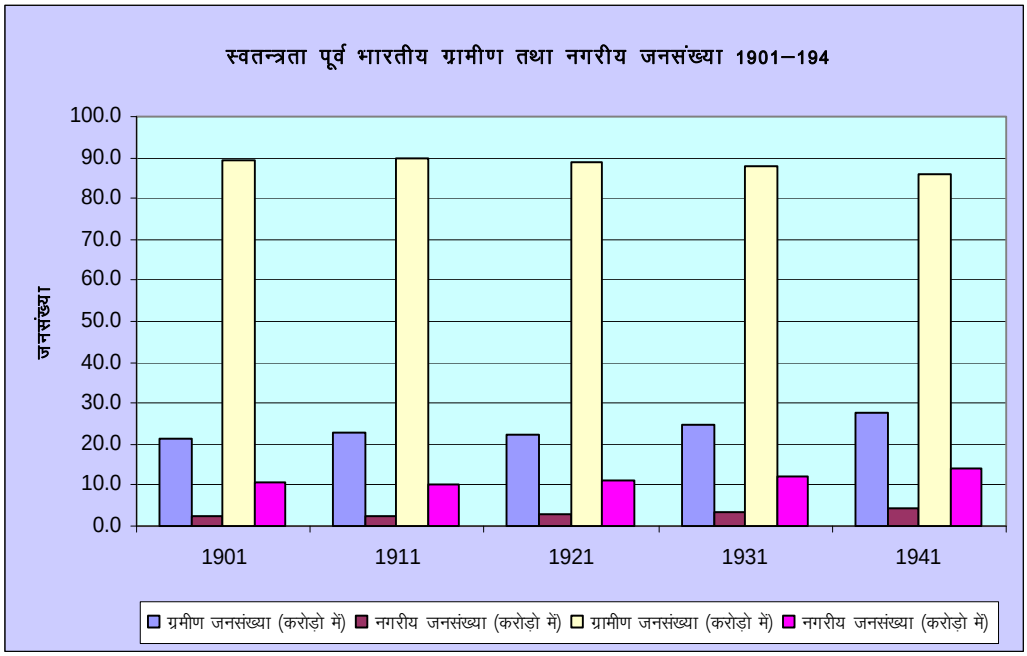

भारत में जनसंख्या वृद्धि का स्वरूप एक समान नही है ग्रामीण जनसंख्या की तुलना में नगरीय जनसंख्या में वृद्धि तेजी से हो रही है। इसके बावजूद, अधिकांश जनसंख्या गांवों में रहती है इस तथ्य की पुष्टि हेतु तालिका 1.5 प्रदार्शित है

भारत में ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या में भिन्नता का कारण गावों से शहरों की और पलायन का होना है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की कमी अन्य मूलभूत आवश्यकताए नही उपलब्ध होती है जैंसे रोजगार,चिकित्सा सुविधाए, शिक्षा, और भी अन्य कारणों से ग्रामीण शहर की और पलायन करते है जिसके कारण नगरीय जनसख्या तेजी से बढ़ रही है। देश की ग्रामीण जनसंख्या 1901 में 89.2 प्रतिशत एवं 19011 में 89.7, 1921 में 88.8,1931 में 88.0 और 1941 में घटकर 86.1 प्रतिशत रह गया है।

स्वतंत्रता पूर्व भारत में लिंगानुपात

जनसंख्या अध्ययन में लिंगानुपात (पुरूष–महिला) का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। लिंगानुपात का अर्थ है कि किसी जनसंख्या में स्त्रियों और पुरूषों का संघटन इसका मापन लिंगानुपात या यौन–अनुपात द्वारा लगाया जाता है लिंगानुपात किसी देश की अर्थव्यवस्था का सूचक भी होता है लिंगानुपात का अध्ययन इसलिए भी अवस्यक होता है जिसके कारण प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव तथा प्रजनन–दर, मृत्युदर, जनसंख्या परिवर्तन, व्यवसायिक संरचना आदि पर होता है।

तालिका 1.6: स्वतंत्रता पूर्व भारत में स्त्री पुरूष अनुपाता (प्रति 1000 पुरूषों पर स्त्रियां)

जनगणना	स्त्री–पुरूष अनुपात
1901	972
1911	964
1921	955
1931	950
1941	945

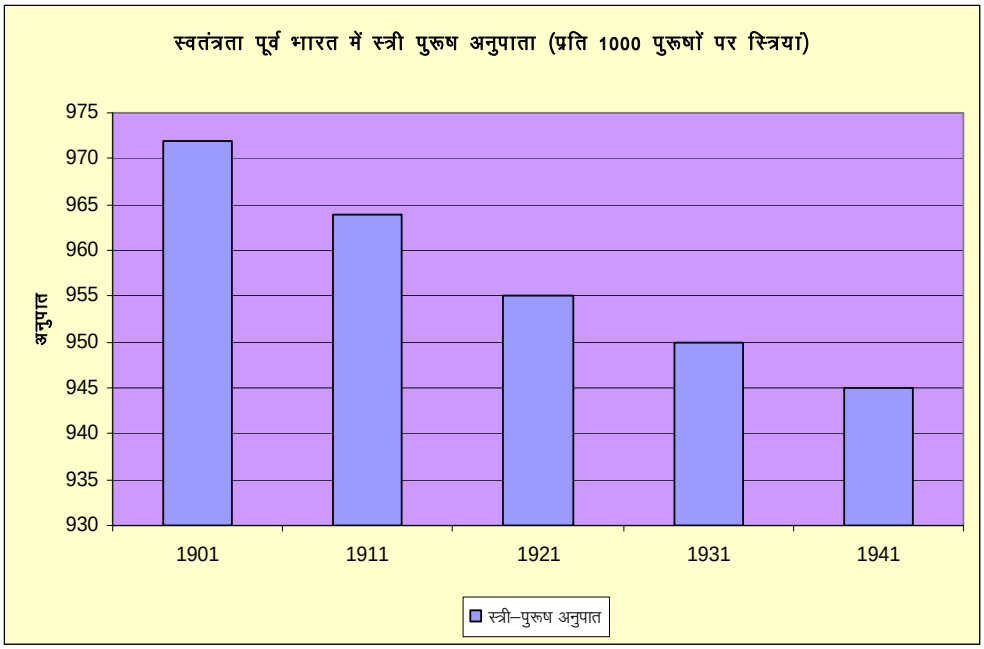

भारत की जनसंख्या संरचना की महत्वपुर्ण विशेषता यह है कि यहा स्त्री की तुलना में पुरूषों की संख्या अधिक है या महिलाओं की संख्या पुरूषों की तुलना में कम हो जो लगातार कम होती जा रही है लिंगानुपात संरचना को तालिका 1.6 का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि 1901 में प्रति 1000 पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या 972 थी तब से लेकर 1941 तक लगातार लिंगानुपात में कमी आई है जो 1941 की जनगणना अनुसार प्रति 1000 पुरूष 945 स्त्रियां थी ।

लिंगानुपात में कमी का मुख्य कारण यह है कि नवागन्तुको के लिए आवास व्यवस्था का आभाव होता है अथवा मजदूरी का अपर्याप्त होना भी एक महत्वपूर्ण कारण हो सकता है

निष्कर्ष : तालिका 1.6 में 1901 से लेकर 1941 तक देश, राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों का स्त्री/पुरूष अनुपात दिया गया है। स्त्री/ अनुपात जनसंख्या की मूलभूत जनसांख्यिकी विशेषताओं में से एक है इसे प्रति हजार पूरूषों की तुलना में महिलाओं की संख्या के रूप में परिभाषित किया जाता है। जनसंख्या का स्त्री/पुरूष अनुपात पुरूषों और महिलाओं की मृत्यु परिस्थितियों में अन्तर, किसी लिंग विशेष में अधिक स्थान परिवर्तन और जन्म के समय स्त्री/पुरूष अनुपात द्वारा प्रभावित होता है। 1901 की जनगणना के आधार पर गोवा एक ऐसा राज्य है जिसका लिंगानुपात सर्वाधिक 1000 पुरूष पर 1091 महिलाए रही। ऐसे राज्य और संघ राज्य क्षेत्र जिनमें 1901–1941 के प्रत्येक दशक के दौरान स्त्री/पुरूष अनुपात हमेशा राष्ट्रीय औसत से अधिक रहा है वे है मणिपुर, मिजोरम, उड़ीसा, गोवा, केरल, और तमिलनाडू ये सभी ऐसे राज्य है जो स्त्री/पुरूष अनुपात में स्वतंत्रता के पूर्व तक महिलाओं के अनुकूल रहे।

संदर्भ

1. प्रतियोगिता दपर्ण, ''भारतीय अर्थव्यवस्था'' 2/11 स्वेदेशी बिमानगर, आगरा (1009)
2. माजिद हुसैन ''भारत एवं विश्व का भूगोल'' टाटा मेग्राहिल–एजुकेशन प्रा0 लि0 (2012)
3. Walter J. Ong. Orality and Literacy, 92-93.
4. Statistical Pocket Book India, 2003.
5. http://censusindia.gov.in/2011.../04population.pdf%2050%20No23.4.pdf
6. http://censusindia.gov.in/2011-prov.../india/Final_PPT_2011chapter7.pdf